जैन धर्म की प्यारी कवितायें

पुष्प ६

रचनाकार
विराग शास्त्री
जबलपुर

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर

पुष्प ६

जैन धर्म की प्यारी कवितायें

रचनाकार

विराग शास्त्री, जबलपुर

विशेष सहयोग

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट

विले पार्ले, मुम्बई

सुवर्णपुरी सोनगढ़ पंचकल्याणक के अवसर पर – 19 जनवरी 2024

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम आवृति : 1000 प्रति

मूल्य : 50/-

1. संकल्प
2. कर्ता कौन
3. हमारे मुनिराज
4. हमारी माँ
5. अच्छी बात
6. होली आई
7. हम करेंगे
8. दादी की बात
9. छुट्टी आई
10. पतंग
11. पाप नहीं प्यार
12. संदेश
13. समवशरण
14. पुकार
15. प्यारा आतम
16. प्रश्न अनेक उत्तर एक

प्राप्ति स्थान : सर्वोदय, 702, जैन बन्धु, फूटाताल, जबलपुर 482 002 म.प्र. मोबा. 9300642434

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर

1

संकल्प

आओ हम सब खेलें खेल,
सबसे दोस्ती सबसे मेल ।
जिनधरम की चलेंगे राह,
जग से हमको कोई न चाह
सब जीवों से रखें प्यार,
नहीं किसी से हो तकरार ।।
हरदम करेंगे ऐसा काम,
जिनशासन की बढ़ेगी शान ।
सबको दें मान सम्मान,
जैनी बच्चे की पहचान ।।
आओ ऐसा साथ निभायें,
मोक्षमार्ग पर बढ़ते जायें ।।

2

कर्ता कौन

सूरज दादा कौन है लाता ?
उसे समय पर कौन छिपाता ?
चंदा मामा की मुस्कान,
दिन और रात का कर्ता कौन ?
फूल खिलाये जग में कौन ?
पानी को बरसाये कौन ?
सागर से बादल बन जाते,
कितने काम स्वयं हो जाते ।।

जन्म मरण का चक्र है चलता,
और बुढ़ापा क्यों आ जाता ?
ऐसे उठते प्रश्न अनेक,
इन सबका उत्तर है एक ।।
स्वयं वस्तु करती परिणाम,
पर में नहीं जीव का काम,
ज्ञाता दृष्टा आतमराम,
इसमें करना है विश्राम ।।

हमारे मुनिराज

बंदर, भालूजी घबराये,
हिरण गाय भी दौड़ लगाये ।
भाग रही थी मौसी बिल्ली,
सहमी रंग–बिरंगी तितली ।।

हाथी दादा पूछे उनसे–
क्या जंगल में प्रलय है आया ?
या कोई तूफान है आया,
हाथ जोड़कर तोता बोला–
एक शिकारी जंगल आया ।।

तुमको अपनी जान है प्यारी,
करो भागने की तैयारी ।
हंसकर दादा हाथी बोले–
तुम प्राणी सब भोले भाले ।।

परम दिगम्बर मुनि हैं आये,
धर्म अहिंसा पाठ सिखाये ।
निर्भयता का पढ़ लो पाठ
मुनि चरणों में करेंगे ठाट ।

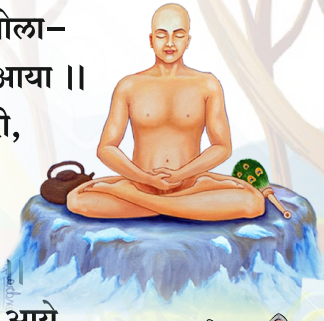

4

हमारी माँ

जिनवाणी माँ मेरी प्यारी,
मुक्तिपुरी की गाती लोरी ।
पाप भाव से हमें बचाये,
धर्म मार्ग में हमें लगाये ।।
जग की माता हमें सुलाती,
जिनवाणी माँ हमें जगाती ।
पंचप्रभु की महिमा गाती,
आतम का गौरव दिखलाती ।।
आओ चेतन सुन लो पाठ,
मोक्षपुरी में करेंगे राज ।।

5

अच्छी बात

सुबह सबेरे जल्दी उठना,
और नहाना अच्छी बात ।।
जिनदर्शन और पूजन करना,
पाठशाला जाना अच्छी बात ।।
पाँच पाप से दूर ही रहना,
भक्ति करना अच्छी बात ।।
मात–पिता और बड़ेजनों की,
आज्ञा मानो अच्छी बात ।।
बुरा न कहना, बुरा न सुनना,
मीठा कहना अच्छी बात ।।
जिनवाणी की बातें पढ़ना,
खुश रहना यह अच्छी बात ।।

होली आई

होली आई होली आई,
बुरा न मानो होली आई ।
नहीं किसी पर रंग डालना,
पानी भी बरबाद न करना ।
घर आंगन सब स्वच्छ रहें,
गंदे रंग से दूर रहें ।
हम जैनों का पर्व नहीं है,
होली में कोई धर्म नहीं है ।।

7

हम भाई हम

कौन करे जिनधर्म की सेवा,
हम भाई हम, हम भाई हम ।
कौन करे जिनशासन भक्ति,
हम भाई हम, हम भाई हम ।
कौन करे जैनी की चर्या,
हम भाई हम, हम भाई हम ।
कौन करे गुरु का सन्मान,
हम भाई हम, हम भाई हम ।
कौन करे जिनधर्म का नाम,
हम भाई हम, हम भाई हम ।

8

दादी की बात

चाचा चाट पकौड़ी लाये,
हम बच्चों का मन ललचाये ।
आईसक्रीम भी चाची लाईं,
मन में सबके खुशियाँ छाईं ।
तभी अचानक दादी आईं,
सबको उनने डांट लगाई ।
हम सब जैनी बच्चे सच्चे,
अभक्ष्य कभी न खाते ।
प्रभु आज्ञा में रहते हैं,
अभक्ष्य दूर से तजते हैं ।।

9

छुट्टी आई

लो गरमी की छुट्टी आई,
छोड़ो पुस्तक और पढ़ाई ।
सुनकर नानी झट मुस्काई,
दी सीख जो समझ में आई ।
खेलो कूदो खाओ मिठाई,
जैन धर्म की करो पढ़ाई ।
बाल शिविर में जाना है,
सम्यक् ज्ञान को पाना है ।
बात समझ में सबको आई,
लो गरमी की छुट्टी आई ।।

10

पतंग

सर सर सर सर उड़े पतंग,
फर फर फर फर उड़ी पतंग,
इसको काटा उसका काटा,
हुआ तभी फिर शोर तमाशा ।।
अरे कटी पक्षी गरदन,
गिरकर मरा रह गये दंग,
खेल हमारा, मरा कबूतर,
नहीं उड़ाऊँ कभी पतंग,
सबसे प्यारा सबसे न्यारा,
परम अहिंसा धर्म हमारा ।।

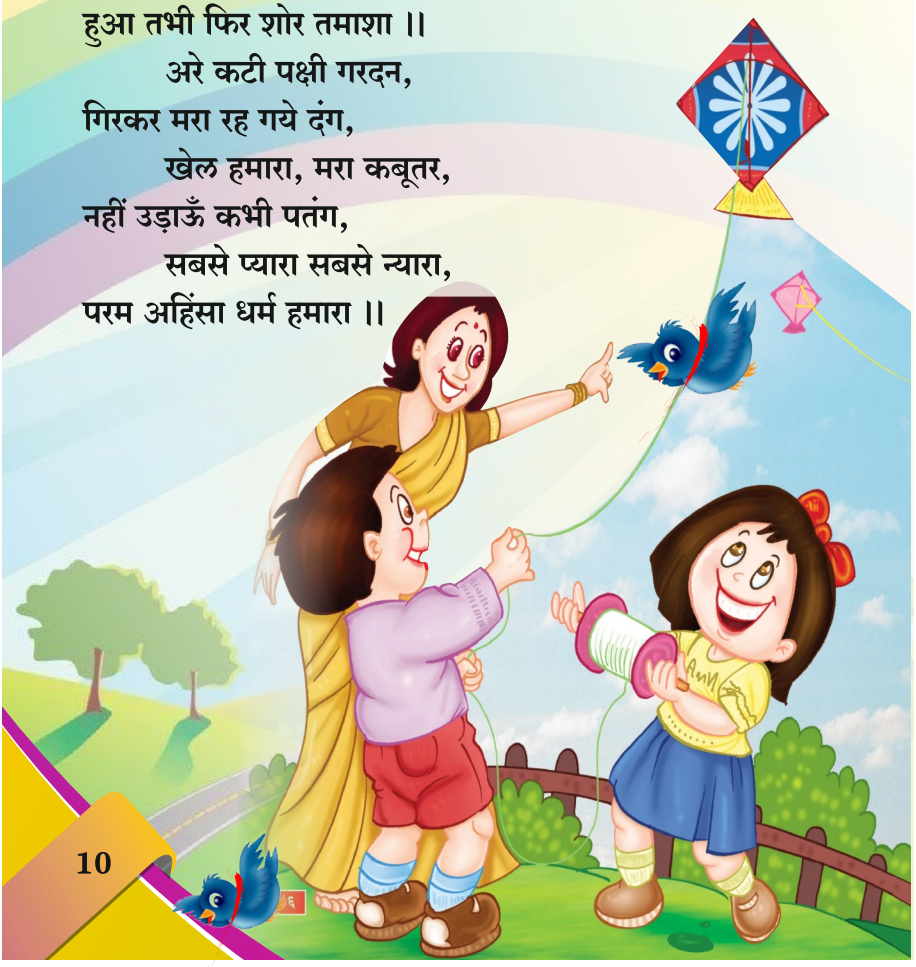

11

पाप नहीं प्यार

आओ मम्मी हम साथ चलें ,
भोजन भी हम साथ करें ।
इक थाली में खायेंगे,
अपना प्यार बढ़ायेंगे ।।
मम्मी बोली ना भाई ना,
एक थाली में खायें ना ।
साथ में भोजन है करना,
पर अलग–अलग ही करना ।।
हिंसा से भी बचना है,
जूठा कभी ना खाना है ।
जूठे भोजन का हो त्याग,
प्यार बढ़ायें छोड़ें पाप ।।

12

संदेश

काला कौवा छत पर बैठा,
देखो शोर मचाता है ।।
कांव–कांव वह करता रहता,
सबकी नींद भागता है ।।
छोड़ो आलस और नहाओ,
जिन मंदिर को जाना है ।।
जिन दर्शन का समय हो गया,
हमको चूक न जाना है ।।

13

समवशरण

वीर प्रभु के समवशरण में,
आओ चले हम साथ में ।।
इन्द्र, देव, मानव भी आये,
और संग मुनिराज हैं ।।
शेर चले मस्ताना होकर,
हाथी दादा आयेंगे ।।
भालू, बंदर और लोमड़ी,
गाय, गधा संग जायेंगे ।।
बिल्ली, कुत्ता बैठे संग–संग
बैर विरोध भुलायेंगे ।।
वीर प्रभु की वाणी सुनकर,
सब भगवन बन जायेंगे ।।

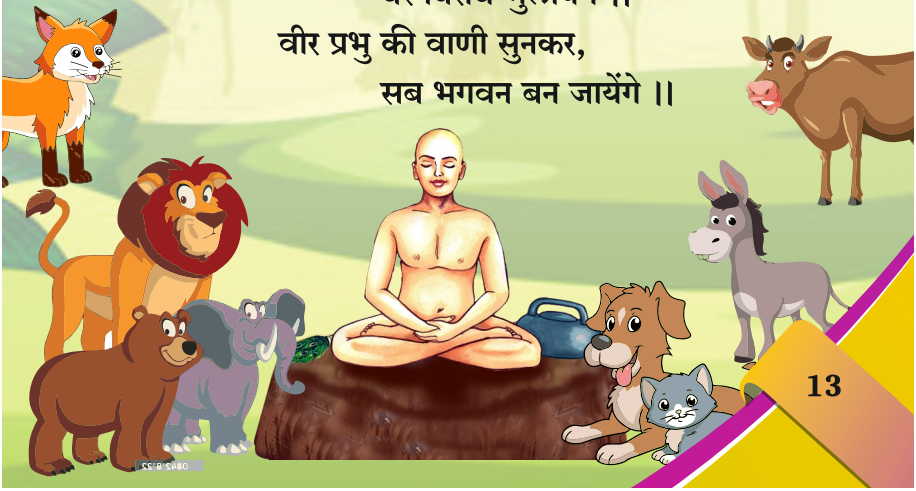

14

पुकार

दौड़–दौड़ा आया आलू,
मूली–प्याज भी आये हैं ।
गाजर, अदरक, पिज्जा, बर्गर,
पेप्सी को संग लाए हैं ।
बोले हाथ जोड़कर सबसे,
कभी न खाना हमको ।
जीव घात होता है इसमें,
पाप लगेगा तुमको ।।
चेतन राजा हँसकर बोला,
कभी न तुमको खाऊँगा ।।
भोजन हिंसा रहित करूँगा,
तब जैनी कहलाऊँगा ।।

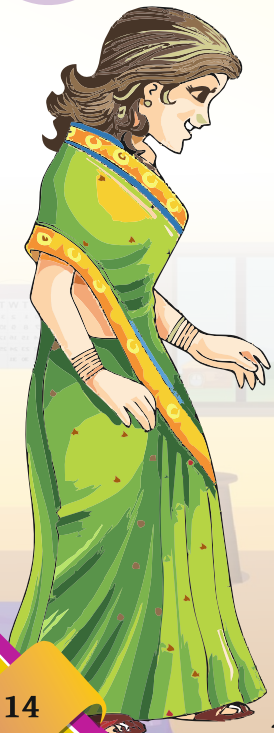

प्यारा आतम

अपना आतम प्यारा है,
कोई न गोरा काला है ।।
न लंबा न ठिगना है,
न मोटा, न पतला है ।।
अग्नि से भी जले नहीं,
पानी से भी गले नहीं ।।
इसका जनम न होता है,
और आतम मरता है ।।
आतम से करना अनुराग,
मुक्तिपुरी में करोगे ठाठ ।।

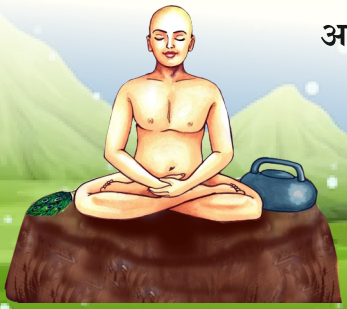

16

प्रश्न अनेक उत्तर एक

प्रश्न अनेक उत्तर एक
किसने सूरज चाँद बनाया,
किसने तारों को चमकाया ?
किसने फूलों को महकाया,
किसने सारा विश्व बनाया ?
कौन जगत का कर्ता है,

यह सब कैसे होता है ?
6 द्रव्यों का जग में नाम,
सब करते अपना परिणाम ।
कोई न इसका कर्ता है,
कार्य स्वयं ही होता है ।
जिनवर का संदेश यही,
श्रद्धा करलो सही–सही ।।

17

अब मत सोओ

उठो लाल अब हो गई भोर,
देखो नाच रहे हैं मोर ।
णमोकार का जाप करो,
फिर दूजा कोई काम करो ।
छने पानी से कर स्नान,
मंदिर जाकर करना ध्यान ।।
पाठशाला में चले चलो,
श्री मुनिवर की बात सुनो ।।
मात–पिता गुरु का सम्मान,
अच्छे बच्चों की पहचान ।
मीठी वाणी का व्यवहार,
सबसे पाओ तुम सत्कार ।
ऐसा सुंदर समय ना खोओ,
मेरे प्यारे अब मत सोओ ।।

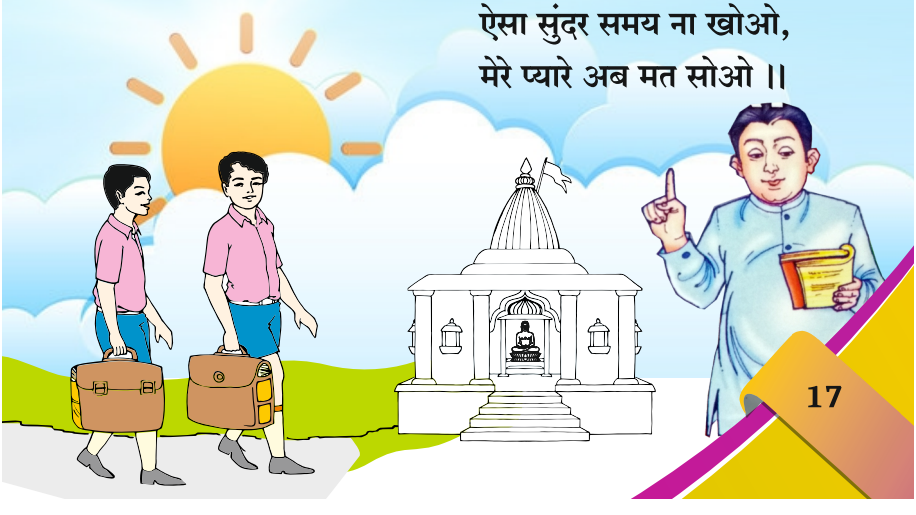

जैन तत्त्वज्ञान को जन-जन तक
पहुँचाने में समर्पित संस्था

जिन देशना

अनंत शांति का एकमात्र आधार

सबका सहयोग-सबका विश्वास हो.....

1. कोरोना काल में सर्वप्रथम ऑनलाईन बाल शिविर का आयोजन।
2. कोरोना काल में सर्वप्रथम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जिनदेशना आध्यात्मिक शिविरों का ऑनलाइन सफल आयोजन।
3. कोरोना काल में अनेक ऑनलाईन बाल शिविरों, गोष्ठियों, विधानों का आयोजन।
4. पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के प्रवचनों के सबटाईटल्स वाले वीडियो निर्माण में योगदान।

5. तत्वज्ञान में सक्रिय युवा विद्वानों का सन्मान।
6. जिनागम के शोध में संलग्न विद्वानों को आर्थिक सहयोग।
7. युवा वर्ग की मुख्यता से जिनदेशना यूथ कन्वेंशन के सफलतम तीन आयोजन।
8. जिनदेशना द्वारा मध्यप्रदेश के 25 नगरों में सामूहिक बाल शिविरों का एक साथ आयोजन।
9. आध्यात्मिक प्रतियोगिताओं के द्वारा जनजागृति और बाल संस्कारों का समावेश।
10. वीर निर्वाण पर्व दीपावली पर पटाखों से होने वाली हिंसा से बचने के जिनदेशना अहिंसा अभियान का संचालन हजारों पुरस्कारों का वितरण।

11. नेपाल में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय जिनदेशना प्रौढ़-युवा शिविर का आयोजन।
12. सभी वर्ग के लिये उपयोगी जैन साहित्य का प्रकाशन।
13. आध्यात्मिक शिविरों और कार्यक्रमों का जिनदेशना यूट्यूब चैनल पर सीधा प्रसारण।